विश्व हिंदी समाचार
Vishwa Hindi Samachaar
विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष: 18 | अंक: 67 | सितंबर, 2024

हिंदी दिवस 2024

हिंदी दिवस 2024 के उपलक्ष्य में विश्व भर में हिंदी की अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस वर्ष विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस सहित भारत, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, सूरीनाम, न्यूज़ीलैंड, कोंगो, जमैका, जॉर्डन, सेशेल्स, हंगरी, होंगकोंग आदि देशों में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अनेक रंगारंग कार्यक्रम हुए। कार्यक्रमों की रिपोर्ट इस अंक में पढ़ें।

पृ. 2-8

कवि-सम्मेलन एवं प्रपत्र-प्रस्तुति

24 जुलाई, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग के तत्त्वावधान में तथा मॉरीश्यन सोसाईटी फ़ोर क्वालिटी कंट्रोल सर्कल्स के सहयोग से कवि-सम्मेलन एवं प्रपत्र-प्रस्तुति का आयोजन किया।

पृ. 8-9

विश्व रंग 2024 - मॉरीशस

विश्व हिंदी सचिवालय, विश्वरंग सचिवालय (भारत), रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (भारत) और टैगोर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (भारत), टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र (भारत), महात्मा गांधी संस्थान एवं रबींद्रनाथ टैगोर संस्थान (मॉरीशस), मॉरीशस की अन्य शैक्षणिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं तथा 50 से अधिक संस्थाओं के सहयोग से विश्व रंग 2024 का भव्य आयोजन दिनांक 7- 9 अगस्त तक विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस में हुआ।

पृ. 9-11

कैरेबियाई क्षेत्र में हिंदी को बढ़ावा देने हेतु अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन

6 सितंबर, 2024 को महात्मा गांधी सांस्कृतिक सहयोग संस्थान, माउंट होप, त्रिनिदाद एवं टोबैगो में अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्देश्य कैरेबियाई क्षेत्र में हिंदी भाषा और इसकी सांस्कृतिक परंपराओं को बढ़ावा देना था, जो भारत और त्रिनिदाद एवं टोबैगो के बीच सुदृढ़ संबंधों का आधार रही है।

पृ. 11

अलका सिन्हा की डायरी पुस्तक 'रूहानी रात और उसके बाद' का लोकार्पण और परिचर्चा

31 अगस्त, 2024 को राजधानी स्थित साहित्य अकादेमी सभागार में अलका सिन्हा की डायरी पुस्तक 'रूहानी रात और उसके बाद' का लोकार्पण और पुस्तक परिचर्चा का आयोजन किया गया। अलका सिन्हा की डायरी अनेक विधाओं को साथ लिए चलती है और समग्रता में यह डायरी कहानी का सा आनंद देती है।

पृ. 15

तेलंगाना हिंदी पत्रकार संघ द्वारा सम्मान समारोह

14 सितंबर, 2024 को पत्रकारिता में हिंदी के योगदान को सम्मानित करने के उद्देश्य से तेलंगाना हिंदी पत्रकार संघ द्वारा हैदराबाद में हिंदी दिवस समारोह आयोजित हुआ, जो दिवंगत हुए प्रतिष्ठित पत्रकार और 'हिंदी मिलाप' के संपादक विनय वीर की स्मृति को समर्पित रहा। संघ ने यह निर्णय लिया कि हर वर्ष एक वरिष्ठ हिंदी पत्रकार को 'विनय वीर स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा।

पृ. 15

इस अंक में आगे पढ़ें :

- सम्मेलन, संगोष्ठी, कार्यशाला, प्रतियोगिता — पृ. 11-13
- आभासी कार्यक्रम — पृ. 13-14
- साक्षात्कार — पृ. 14
- लोकार्पण — पृ. 15
- सम्मान एवं पुरस्कार — पृ. 15
- संपादकीय — पृ. 16

ISSN 1694-2485

हिंदी दिवस 2024

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा हिंदी दिवस का आयोजन

दो दिवसीय कार्यशाला : 'हिंदी नाटक : अभिनय एवं मंचन'

19-20 सितंबर, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तत्त्वावधान में और कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय तथा धूप-छाँव हिंदी नाट्य समूह, अटलांटा, यू.एस.ए. के सहयोग से हिंदी दिवस 2024 के उपलक्ष्य में दो दिवसीय कार्यशाला : 'हिंदी नाटक : अभिनय एवं मंचन' का आयोजन किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी, धूप-छाँव हिंदी नाट्य समूह, अटलांटा, यू.एस.ए. के संस्थापक एवं निदेशक, श्रीमती संध्या सक्सेना भगत तथा कार्यक्रम एवं गतिविधि उप-समिति की सदस्या, श्रीमती अनुपमा चमन-चोमू द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन के साथ हुआ।

कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्री, माननीय श्री अविनाश तिलक ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी एक भाषा ही नहीं, बल्कि भाषा से कहीं बढ़कर है। आज हिंदी सिर्फ़ संगीत, रंगमंच, सिनेमा तक सीमित नहीं है, बल्कि आज हिंदी का आर्थिक तथा ऐतिहासिक महत्त्व है।

भारतीय उच्चायोग के प्रतिनिधि एवं प्रथम सचिव (अर्थशास्त्र), श्री रंजन कुमार सिंह ने

अपने उद्बोधन में बताया कि भाषा संस्कार की वाहिका होती है, भाषा का एक अपना संदर्भ और एक अपना अर्थशास्त्र होता है।

शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के कार्यवाहक निदेशक, श्री निरंजन बिगन ने कहा कि हिंदी दिवस केवल एक तारीख तक सीमित न हो, बल्कि हर दिन, हर पल, हर क्षण अगर हम हिंदी का प्रयोग करें, चाहे वह लिखित रूप में हो, चाहे वह मौखिक रूप में, तो मैं समझता हूँ कि हम अपनी ओर से हिंदी का सम्मान कर रहे हैं तथा हिंदी की गरिमा बढ़ा रहे हैं।

धूप-छाँव हिंदी नाट्य समूह, अटलांटा, यू. एस.ए. की संस्थापक एवं निदेशक, श्रीमती संध्या सक्सेना भगत ने 'हिंदी के प्रसार में नाटक का योगदान' विषय पर अपने उद्बोधन में बताया कि अभिनय भाषा-शिक्षण को संस्कृति से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा कि नाट्य विधा के माध्यम से जब हम हिंदी सीखते हैं, तब अनायास ही हिंदी बोलने लग जाते हैं।

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने अपने स्वागत-संबोधन में कहा कि हिंदी दिवस का मुख्य उद्देश्य हिंदी में बोलचाल को बढ़ावा देना है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए विश्व हिंदी सचिवालय ने अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संवाद प्रतियोगिता

विश्व हिंदी सचिवालय ने हिंदी दिवस 2024 के अवसर पर 'हिंदी बोलें' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया था। इसके लिए 12 से लेकर 14 वर्ष की आयु के प्रतिभागियों को पाँच भौगोलिक क्षेत्रों - अफ़्रीका व मध्य पूर्व, अमेरिका, एशिया, ऑस्ट्रेलिया तथा भारत में बाँटा गया था। इन भौगोलिक क्षेत्रों के प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों की वीडियो प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम में प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

नाटक-प्रस्तुति

इस अवसर पर धूप-छाँव हिंदी नाट्य समूह, अटलांटा, यू.एस.ए. के कलाकारों ने 'चोंचू नवाब' नाटक का मंचन किया। इस नाटक में नवाब साहब शुरू से ही एक तस्वीर, जो दर्शकों को नहीं दिखती है, के साथ रोते रहते हैं। नाटक के अंत में पता चलता है कि चोंचू नवाब उनके मुर्गे का नाम था। धूप-छाँव हिंदी नाट्य समूह, अटलांटा, यू.एस.ए. के कलाकारों ने श्री चंद्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा रचित 'उसने कहा था' कहानी को नाटक के रूप में मंचित किया।

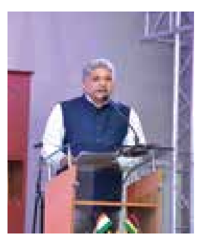

विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी भाषा है और इसके संवर्द्धन के लिए हम उत्साह एवं ऊर्जस्विता के साथ कदम-से-कदम मिलाकर कार्य करते रहेंगे।

भोजनोपरांत, 'त्योहार' नामक नाटक का मंचन धूप-छाँव हिंदी नाट्य समूह, अटलांटा, यू.एस.ए. के कलाकारों द्वारा किया गया। इस नाटक में ईद के पूर्व रमज़ान तथा रमज़ान के बाद ईद के चाँद का चित्रण है। इसमें भाग लेने वाले कलाकारों में मोइज़ हुसैन अली, पूर्णिमा राज, हेतल सुरतवाला राजपूत तथा मनीष दुबे रहे। मंच का प्रबंधन अनिल भगत तथा कार्तिकेय भगत द्वारा किया गया।

कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय के कार्यवाहक वरिष्ठ संस्कृति अधिकारी, डॉ. राकेश सिरकिसुन ने ‘चोंचू नवाब’ के मंचन पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि इस नाटक की चर्चा नाट्यशास्त्र में भरत मुनि द्वारा हास्य रस के रूप में की गई थी। उन्होंने ‘उसने कहा था’ तथा ‘त्योहार’ नामक नाटक में वेशभूषा, अभिनय, देशकाल, वातावरण तथा संवाद की सराहना की।

द्वितीय सत्र

दूसरे दिन की शुरुआत हिंदू गर्ल्स कॉलिज की छात्राओं द्वारा ‘परिश्रम का फल मीठा होता है’ नामक नाटक की प्रस्तुति से हुई। इस नाटक में बताया गया है कि मस्ती करने वाले उत्तीर्ण नहीं होते तथा निरंतर मेहनत करने वाले उत्तीर्ण होते हैं। इसी क्रम में ‘हाव-भाव के साथ हिंदी शब्दों, वाक्यों एवं संवादों के प्रयोग’ विषय पर अपनी प्रस्तुति में श्रीमती संध्या सक्सेना भगत ने वेशभूषा पर ध्यान देने की बात कही। ऋतम्भरा मित्तल तथा मनीष दुबे ने नाटक के चार तत्त्वों - आहार्य, सात्विक, वाचिक और आंगिक पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पर बल दिया।

वाक्वा रंग भूमि कला मंदिर के कलाकारों द्वारा ‘रावण-लीला’ नामक नाटक प्रस्तुत किया गया। इस नाटक में रावण कहता है कि मेरा कोई अंत नहीं, क्योंकि मृत्यु का स्वामी यमराज मेरी दया पर जीता है। दूसरे भाग में जब रावण अशोक वाटिका में आकर सीता को भाँति-भाँति के लालच व डर दिखाने लगता है और कहता है कि राम में इतनी शक्ति कहाँ कि वह यहाँ तक आने का प्रयास कर सके, तो माता सीता कहती है कि स्त्री केवल अपने पति को ही भगवान मानती है।

समापन-समारोह

समापन-समारोह में धूप-छाँव हिंदी नाट्य समूह, अटलांटा, यू.एस.ए. के कलाकारों द्वारा ‘आधे-अधूरे’ नाटक का मंचन किया गया। तत्पश्चात् विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी, हिंदी स्पीकिंग यूनियन के अध्यक्ष, डॉ. उदय नारायण गंगू, भारतीय उच्चायोग के प्रतिनिधि, श्री रंजन कुमार सिंह तथा कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय की उपनिदेशक (संस्कृति), श्रीमती अनुपमा चमन के कर-कमलों द्वारा धूप-छाँव हिंदी नाट्य समूह, अटलांटा, यू.एस.ए. के कलाकारों को भेंट प्रस्तुत की गई। धन्यवाद-ज्ञापन श्री अनिल भगत, प्रबंधक, धूप-छाँव हिंदी नाट्य समूह, यू.एस.ए. द्वारा किया गया। श्री प्रकाश वीर, वरिष्ठ सहायक संपादक, विश्व हिंदी सचिवालय ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

हिंदी दिवस 2024 : भारत

मुंबई

7 अक्टूबर, 2024 को इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन प्रायोगिक सूक्ष्मतरंग इलेक्ट्रॉनिक इंजिनीयरिंग तथा अनुसंधान संस्था में हिंदी दिवस का मुख्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर, संस्थान में विभिन्न सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, जिनमें वैज्ञानिकों, प्रशासनिक अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। 18 सितंबर को समीर, मुंबई परिसर में हिंदी निबंध-लेखन प्रतियोगिता के साथ पखवाड़े की शुरुआत हुई। समापन समारोह 7 अक्टूबर को आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री राजेश हर्ष, कार्यक्रम निदेशक ने की। मुख्य अतिथि श्री नंदकुमार व्यास ने ‘राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति और कार्यान्वयन’ विषय पर प्रेरणादायक व्याख्यान दिया। उन्होंने हिंदी के प्रशासनिक उपयोग और सामाजिक भूमिका को रेखांकित किया। डॉ. आलोक वर्मा, राजभाषा नोडल अधिकारी ने दैनिक कार्यों में हिंदी के सक्रिय प्रयोग का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी अधिकारी, श्री गायकवाड द्वारा किया गया। समापन पर प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

साभार : प्रायोगिक सूक्ष्मतरंग इलेक्ट्रॉनिक इंजिनीयरिंग तथा अनुसंधान संस्थान, इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार की आधिकारिक वेबसाइट

पटना

30 सितंबर, 2024 को कर्मचारी राज्य बीमा निगम के क्षेत्रीय कार्यालय, पटना में हिंदी पखवाड़ा के समापन-समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी परिषद्, भारत के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र कुमार यादव का उद्बोधन हुआ। कार्यक्रम में निदेशक, श्री संजय कुमार, डॉ. विजय केशरी, राज्य चिकित्सा अधिकारी, डॉ. तनुजा, चिकित्सा निर्देशी, डॉ. रजनी, एल पी राय, पेंशनर संघ के अध्यक्ष , सहायक निदेशकगण, हिंदी अधिकारी, श्री अनिल कुमार, निजी

सचिव, श्रीमती सुनीता कुमारी, अधीक्षक एवं संचालक, रिति द्विवेदी ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

साभार : वैश्विक हिंदी सम्मेलन का फ़ेसबुक पेज

पुणे

17 से 30 सितंबर तक सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल), पुणे में हिंदी पखवाड़ा 2024 का आयोजन किया गया। पखवाड़े के अंतर्गत निबंध-लेखन, शुद्ध-लेखन, काव्य-पाठ, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता और विज्ञान संगोष्ठी जैसी विविध गतिविधियाँ संपन्न हुईं, जिनमें एनसीएल के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं शोध छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत 17 सितंबर को निबंध प्रतियोगिता से हुई। 18 और 19 सितंबर को क्रमशः शुद्ध-लेखन और काव्य-पाठ प्रतियोगिता आयोजित हुईं, जिनमें निर्णायक के रूप में सी-डैक पुणे के राजभाषा अधिकारी श्री प्रभाकर पांडे उपस्थित रहे। 20 सितंबर को हुई सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में दर्शकों को भी सम्मिलित किया गया। 23 सितंबर को 'मूलभूत अनुसंधान' विषय पर विज्ञान हिंदी संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें कई वैज्ञानिकों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। समापन-समारोह 30 सितंबर को हुआ, जिसमें प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. सुनिल देवधर मुख्य अतिथि तथा एनसीएल निदेशक डॉ. आशीष लेले अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे। समारोह में विजेताओं को पुरस्कार दिए गए और प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। अंत में, प्रशासनिक अधिकारी श्री कौशल कुमार ने हिंदी के प्रयोग हेतु प्रेरणादायक आभार प्रस्तुत किया। हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति में डॉ. अशोक गिरी, डॉ. स्वाति चड्ढा, श्री कौशल कुमार सहित अन्य सदस्यों का विशेष योगदान रहा।

साभार : सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल) की आधिकारिक वेबसाइट

मथुरा

14 सितंबर, 2024 को रोमेक्स इंटरनेशनल स्कूल, मथुरा में हिंदी दिवस का आयोजन उत्साह और गरिमा के साथ किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना-सभा से हुई, जिसमें विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के महत्त्व और इसकी सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराया गया। विद्यालय प्रशासन ने हिंदी को संस्कृति, पहचान और राष्ट्र की आत्मा बताया। इस अवसर पर, विभिन्न शैक्षणिक और रचनात्मक गतिविधियाँ आयोजित की गईं। एलकेजी से यूकेजी के बच्चों ने हिंदी राइम प्रतियोगिता में भाग लेकर अपनी काव्य-प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों के लिए हिंदी सुलेख प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें सुंदर लिखावट का अभ्यास कराया गया। कक्षा 9 के विद्यार्थियों ने 'प्रतिबिंब प्रतियोगिता' में प्रसिद्ध हिंदी कवियों और कवयित्रियों की वेशभूषा में प्रस्तुति देकर उनके साहित्यिक योगदान को सजीव किया। इस प्रस्तुति ने छात्रों में हिंदी साहित्य के प्रति प्रेम और समझ को बढ़ावा दिया। विद्यालय प्रशासन ने सभी को यह संदेश दिया कि हिंदी हमारी सांस्कृतिक धरोहर है, जिसे संजोना और आगे बढ़ाना हम सभी का दायित्व है।

साभार : रोमेक्स इंटरनेशनल स्कूल, मथुरा, उत्तर प्रदेश का फ़ेसबुक पेज

14 सितंबर, 2024 को कन्हा माखन पब्लिक स्कूल, मथुरा में हिंदी दिवस के अवसर पर एक भावपूर्ण कार्यक्रम हुआ, जिसमें हिंदी विभाग के शिक्षकों ने हिंदी भाषा की उत्पत्ति, विकास और उसकी सांस्कृतिक महत्ता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सभी ने यह संकल्प लिया कि वे हिंदी भाषा के संवर्धन हेतु प्रयास करते रहेंगे। कार्यक्रम का समापन इस प्रेरणास्पद विचार के साथ हुआ कि "हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक भावना है, जो समाज को एकता के सूत्र में बाँधती है।"

साभार : कन्हा माखन पब्लिक स्कूल, मथुरा का फ़ेसबुक पेज

मध्य प्रदेश

14 सितंबर, 2024 को स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, आवासीय दिव्यांग संस्थान, पैरामेडिकल कॉलिज, फ़ार्मेसी कॉलिज एवं निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में हिंदी दिवस 2024 मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमती वर्षा शर्मा के प्रेरणादायक विचारों से हुई, जिन्होंने हिंदी को सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान का आधार बताया। श्रीमती अंजू लता पाण्डेय, श्री संजय प्रजापति और धीरज कुमार सेन ने हिंदी के ऐतिहासिक, व्यावहारिक और संवैधानिक महत्त्व पर प्रकाश डाला। धीरज कुमार सेन ने बताया कि हिंदी को 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था, तभी से यह दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाता है। कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत कविता-पाठ और सांस्कृतिक गीतों ने माहौल को जीवंत बना दिया। समापन के अवसर पर कुमारी अनुपम बुंदेला ने हिंदी की महत्ता पर सारगर्भित वक्तव्य देते हुए सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। यह आयोजन हिंदी भाषा के प्रति सम्मान, गर्व और समर्पण की भावना को जाग्रत करने वाला रहा।

साभार : भास्करहिंदी.कॉम

मेघालय

17 सितंबर से 4 अक्टूबर, 2024 तक उत्तर पूर्व अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एनईसैक), शिलांग में हिंदी पखवाड़ा सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। पखवाड़े का उद्घाटन डॉ. के.के. शर्मा, समूह प्रमुख, आरएसएजी द्वारा किया गया। इस अवसर पर, श्री शारिक आलम ने माननीय केंद्रीय गृह मंत्री का संदेश पढ़कर सुनाया तथा श्री कुमार आनंद, प्रशासनिक अधिकारी ने विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी साझा की। कार्यक्रम के दौरान कर्मचारियों, सीआईएसएफ़ के जवानों और उनके परिजनों के

लिए नोटिंग/ड्राफ्टिंग, हिंदी टाइपिंग, अनुवाद, अंताक्षरी, कविता-पाठ तथा राजभाषा प्रश्नोत्तरी जैसी विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। समापन-समारोह में डॉ. एस.पी. अग्रवाल, निदेशक, एनईसैक ने वैज्ञानिक क्षेत्र में हिंदी की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के नियमित प्रयोग को प्रोत्साहित किया। विजेताओं को पुरस्कार व प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। समापन-सत्र में श्री कुमार आनंद ने सभी प्रतिभागियों एवं सहयोगियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

साभार : उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, शिलांग, मेघालय की आधिकारिक वेबसाइट

मेरठ

14 सितंबर, 2024 को सी.जे.डी.ए.वी. स्कूल, मेरठ में हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर 'बाल कवि-सम्मेलन' आयोजित हुआ, जिसमें विद्यार्थियों ने काव्य-पाठ के माध्यम से हिंदी भाषा में अपनी रचनात्मकता दर्शायी। कार्यक्रम में प्रधानाचार्या, डॉ. अल्पना शर्मा ने राष्ट्रीय कवि, श्री सुमनेश सुमन (मुख्य अतिथि) एवं राष्ट्रीय कवयित्री, श्रीमती तुषा शर्मा (विशिष्ट अतिथि) का अभिनंदन पौधा, शॉल और स्मृति चिह्न भेंट कर किया। विद्यार्थियों ने तुलसीदास, कबीर, दिनकर, हरिवंश राय बच्चन, नागार्जुन, हरिओम पंवार और कुमार विश्वास जैसे विख्यात कवियों की रचनाओं की प्रस्तुति से मंच को साहित्यिक गरिमा से समृद्ध किया। प्रस्तुत कविताओं में ओज, वीर, हास्य, श्रृंगार और करुण रस की सुंदर झलक दिखाई दी। विद्यार्थियों की भावनात्मक प्रस्तुतियाँ विशेष सराहना का केंद्र रहीं। कर्ण संवाद, हास्य कविताएँ एवं श्रृंगार रस ने दर्शकों को भावविभोर कर तालियों से सभागार गुंजायमान कर दिया। मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि ने बच्चों के प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं अपनी स्वरचित कविताओं से सम्मेलन की शोभा बढ़ाई। अंत में, प्रधानाचार्या, डॉ. अल्पना शर्मा ने सभी बाल कवियों को शुभाशीर्वाद देते हुए कविता को 'आत्मा की अनुभूति' बताया, जिसे विद्यार्थियों ने हृदय से जिया।

साभार : सी.जे.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, मेरठ का फ़ेसबुक पेज

जयपुर

सेंट्रल एकेडमी स्कूल, तारानगर, जयपुर में 14 से 19 सितंबर 2024 तक हिंदी सप्ताह मनाया गया। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने "हिंदी बचाओ" विषय पर गणेश मंदिर, तारानगर चौराहे पर एक प्रभावशाली नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। विद्यालय परिसर में हिंदी लेखन, श्रुतिलेख तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ। संस्था प्रधान श्रीमती विजय श्री मिश्रा ने विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया और हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु उन्हें प्रयासरत रहने के लिए प्रेरित किया।

साभार : सेंट्रल एकेडमी स्कूल, तारानगर, जयपुर का फ़ेसबुक पेज

हैदराबाद

17 सितंबर, 2024 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), बीबीनगर में कार्यकारी निदेशक डॉ. विकास भाटिया के कुशल नेतृत्व में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन हुआ। इस अवसर पर हिंदी गीत-गायन, अंत्याक्षरी और निबंध-लेखन का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के संकाय सदस्य, कर्मचारी, नर्सिंग अधिकारी एवं छात्र-छात्राओं ने भागीदारी की। एम्स बीबीनगर की राजभाषा समिति के अध्यक्ष डॉ. प्रज्ञेश परमार ने कहा, "हिंदी में काम करना हमारे राष्ट्र की सेवा है।" यह अब एम्स बीबीनगर का आदर्श वाक्य बन चुका है।

साभार : अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, बीबीनगर, हैदराबाद की आधिकारिक वेबसाइट

हिंदी दिवस 2024 : विश्व भर

विएना, ऑस्ट्रिया

4 अक्टूबर, 2024 को भारतीय दूतावास, विएना के सांस्कृतिक हॉल में हिंदी दिवस मनाया गया, जिसमें प्रवासी भारतीय समुदाय के सदस्यों और हिंदी प्रेमियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम में दो प्रतियोगिताएँ हुईं - कविता-पाठ और हिंदी प्रश्नोत्तरी। प्रतिभागियों ने कविता-पाठ में अपनी मौलिक रचनाएँ प्रस्तुत कीं अथवा प्रसिद्ध हिंदी कवियों की कविताओं का प्रभावशाली पाठ किया। पूरे कार्यक्रम के दौरान एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियाँ हुईं। हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के भाषा-ज्ञान और तत्परता की परीक्षा ली गई। समारोह के अंत में सभी प्रतिभागियों को उपहार देकर सम्मानित किया गया, जिससे उनका उत्साह बढ़ा। यह आयोजन प्रवासी भारतीयों के बीच हिंदी भाषा के प्रति सांस्कृतिक जुड़ाव और भावनात्मक संबंध को प्रगाढ़ करने वाला सिद्ध हुआ।

साभार : भारतीय दूतावास, विएना, ऑस्ट्रिया का फ़ेसबुक पेज

किंशासा, कोंगो

14 सितंबर, 2024 को भारतीय दूतावास, किंशासा, कोंगो में हिंदी दिवस का आयोजन समारोहपूर्वक हुआ। कार्यक्रम में दूतावास के अधिकारी, कर्मचारी, भारतीय मूल के नागरिक तथा स्थानीय स्कूलों के विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। प्रतिभागियों ने हिंदी भाषा के प्रति अपना गहरा लगाव जताया।

कविता-पाठ प्रतियोगिता में सुंदर रचनाओं का पाठ किया गया। निबंध-लेखन प्रतियोगिता में विविध समसामयिक विषयों पर प्रतिभागियों ने अपने विचार प्रकट किए। अंत में, विजेताओं को भारतीय दूतावास के अधिकारियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। यह आयोजन हिंदी भाषा की वैश्विक उपस्थिति को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

साभार : *भारतीय दूतावास, किंशासा, कोंगो का फ़ेसबुक पेज*

किंग्सटन, जमैका

14 सितंबर, 2024 को हिंदी दिवस 2024 के अवसर पर भारतीय उच्चायोग, किंग्स्टन (जमैका) में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भारतीय उच्चायुक्त श्री मयंक जोशी ने प्रारंभिक उद्बोधन किया, जिसमें उन्होंने हिंदी भाषा के इतिहास तथा भारतवासियों के साथ इसके गहरे सांस्कृतिक जुड़ाव की रोचक शैली में जानकारी दी। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में श्री जय प्रकाश द्वारा कविता-पाठ, श्री आशीष चौहान द्वारा निबंध-वाचन और श्री अनुज वर्मा द्वारा संगीत गायन शामिल था। इन प्रस्तुतियों ने हिंदी भाषा के प्रति श्रोताओं के प्रेम को सुदृढ़ किया। अंत में, सभी आगंतुकों ने पारंपरिक भारतीय व्यंजनों का स्वाद लिया, जिससे एक आत्मीय और आनंददायक वातावरण में कार्यक्रम का समापन हुआ।

साभार : भारतीय उच्चायोग, किंग्सटन, जमैका का फ़ेसबुक पेज

हैम्बर्ग, जर्मनी

13 सितंबर, 2024 को भारत के प्रधान कौंसुलावास, फ़्रैंकफ़र्ट में हिंदी दिवस सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम के अंतर्गत कविता-पाठ, मुहावरा प्रतियोगिता तथा श्रुतलेख प्रतियोगिता हुई। कौंसुलावास के अधिकारियों एवं भारतीय समुदायों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त गैर हिंदी भाषी राज्यों से आए प्रतिनिधियों की सहभागिता ने कार्यक्रम में विविधता और ऊर्जा का संचार किया। श्री विभा कांत शर्मा, कौंसल (प्रेस, सूचना एवं संस्कृति) ने स्वागत-भाषण दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है और हमें इसे अपने दैनिक कार्य का हिस्सा बनाना है। ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू मुख्यालय से पधारे श्री श्रीनिधि ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उन्होंने हिंदी भाषा की सहजता और सौंदर्य पर गहन अंतर्दृष्टि प्रदान की। यह आयोजन न केवल हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का माध्यम बना, बल्कि भाषायी एकता और सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने वाला सिद्ध हुआ।

साभार : भारतीय कौंसलावास, हैम्बर्ग, जर्मनी का फ़ेसबुक पेज

जुबा, साउथ सूडान

14 सितंबर, 2024 को भारतीय दूतावास, जुबा ने भारतीय संघ, दक्षिण सूडान के सहयोग से हिंदू मंदिर (जेआईटी परिसर) में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। भारत के गृह मंत्री और रक्षा मंत्री के प्रेरणादायक वीडियो संदेशों से समारोह की शुरुआत हुई। उन्होंने हिंदी की संवैधानिक भूमिका और उपयोगिता को रेखांकित किया। इसके पश्चात् भारतीय राजदूत और अन्य गणमान्य वक्ताओं ने हिंदी के अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव और प्रवासी समुदाय में इसकी भूमिका पर विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों की प्रस्तुतियों में साहित्यिक उत्कृष्टता देखने को मिली। दक्षिण सूडान में कार्यरत भारतीय समुदाय के सदस्यों के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र मिशन में तैनात भारतीय शांति सैनिकों की सक्रिय भागीदारी ने समारोह को अधिक गरिमामय बना दिया। यह आयोजन विदेश भूमि पर हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को सशक्त करने वाला एक महत्त्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

साभार : भारतीय दूतावास, जुबा, साउथ सूडान की आधिकारिक वेबसाइट

अम्मान, जॉर्डन

14 सितंबर, 2024 को भारतीय दूतावास, अम्मान, जॉर्डन में हिंदी दिवस मनाया गया, जिसमें हिंदी भाषा की सांस्कृतिक महत्ता को रेखांकित किया गया। वक्ताओं ने स्पष्ट किया कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक सशक्त कड़ी है, जो हमें अतीत, वर्तमान और भविष्य से जोड़ती है। यह हमारी संस्कृति, विरासत और आत्मसम्मान की पहचान है। इसीलिए हिंदी भाषा को बढ़ावा देने की ज़िम्मेदारी समस्त भारतीय समुदाय की साझा ज़िम्मेदारी है। वक्ताओं ने इस बात पर बल दिया कि हिंदी को अगली पीढ़ियों तक पहुँचाना है। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को जीवंत बनाया। ज़िला शिक्षा अधीक्षक महोदय, सिमडेगा (झारखंड) का विशेष आभार व्यक्त किया गया, जिनके सुनियोजित मार्गदर्शन एवं समन्वयन से कार्यक्रम प्रभावशाली रूप से आयोजित हो सका। साथ ही, डायट सिमडेगा की सक्रिय भूमिका अत्यंत सराहनीय रही। कवियों की रचनात्मक सहभागिता और विद्यार्थियों की भावनात्मक प्रस्तुतियाँ इस आयोजन की आत्मा रहीं।

साभार : भारतीय दूतावास, अम्मान, जॉर्डन का फ़ेसबुक पेज

काठमांडू, नेपाल

14 सितंबर, 2024 को भारतीय राजदूतावास, काठमांडू द्वारा नेपाल-भारत पुस्तकालय में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंदी और नेपाली साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के विख्यात विद्वान प्रो. रामदयाल राकेश मुख्य अतिथि के रूप में

उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विभिन्न विद्वानों ने हिंदी और नेपाली साहित्य के समृद्ध संबंधों और सांस्कृतिक संगम पर अपने विचार व्यक्त किए। हिंदी भाषा की समृद्धि एवं उसकी वैश्विक महत्ता पर विस्तृत चर्चा हुई। इसके अतिरिक्त, केन्द्रीय विद्यालय, काठमांडू के विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। इस आयोजन द्वारा नेपाल और भारत का सांस्कृतिक संबंध सशक्त हुआ।

साभार : भारतीय राजदूतावास, काठमांडू, नेपाल

पर्थ, ऑस्ट्रेलिया

30 सितंबर, 2024 को हिंदी समाज एवं भारत के महावाणिज्य दूतावास, पर्थ के संयुक्त तत्त्वावधान में हिंदी दिवस 2024 उल्लासपूर्वक आयोजित हुआ। कार्यक्रम में पश्चिमी ऑस्ट्रेलियाई हिंदी भाषा विद्यालय (पाठशाला) के छात्रों व शिक्षकों ने भाग लिया। 'हिंदी मेरा अभिमान' गीत से कार्यक्रम शुरू हुआ, जिसके बाद 'भाषा एकीकरण' पर आधारित प्रभावशाली नाटक प्रस्तुत किया गया। युवा प्रतिभागियों ने ग़ज़ल और कविता से सबका मन मोह लिया। उत्तर प्रदेश अवध मंच ने लघु नाटक 'देसी माता-पिता, विदेशी बच्चे' प्रस्तुत किया। इस नाटक ने मातृभाषा की महत्ता को उजागर किया। कलम दावत समूह के कवियों और लेखकों ने अपनी साहित्यिक रचनाओं से कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की। रीता कौशल द्वारा उनकी नवीनतम पुस्तक 'स्मृतियाँ' का परिचय भी इस अवसर पर कराया गया। महावाणिज्य दूतावास के काउंसुलर ने पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में किए जा रहे प्रयासों के लिए हिंदी समाज को बधाई दी। यह आयोजन सांस्कृतिक जागरूकता उत्पन्न करने में कारगर सिद्ध हुआ।

साभार : भारत के महावाणिज्य दूतावास, पर्थ का फ़ेसबुक पेज

सेशेल्स

भारतीय उच्चायोग, सेशेल्स द्वारा हिंदी दिवस का आयोजन 14 सितंबर, 2024 को किया गया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न रोचक गतिविधियाँ आयोजित की गईं, जिनमें कनिष्ठ वर्ग के बच्चों द्वारा कविता-पाठ हुआ। वहीं वरिष्ठ वर्ग के बच्चों ने 'एक शब्द-अनेक शब्द' प्रतियोगिता में हिंदी शब्दों के पर्यायवाची शब्दों का कुशलतापूर्वक प्रयोग कर दर्शकों को प्रभावित किया। अंत में, सभी विजेताओं को प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, सेशेल्स का फ़ेसबुक पेज

बुडापेस्ट, हंगरी

26 सितंबर, 2024 को अमृता शेरगिल सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय दूतावास, बुडापेस्ट में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत बाँसुरी की मधुर धुनों से हुई, जिसने पूरे वातावरण को सुरम्य बना दिया। विशेष आकर्षण के रूप में विदेशी छात्रों द्वारा एक सांस्कृतिक नृत्य की प्रस्तुति हुई, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। इस आयोजन ने हिंदी भाषा के प्रति उत्साह बढ़ाया और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को उजागर किया।

साभार : भारत का दूतावास, बुडापेस्ट, हंगरी का फ़ेसबुक पेज

होंगकोंग

14 सितंबर, 2024 को भारतीय महावाणिज्य दूतावास, होंगकोंग में हिंदी दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम में युवाओं ने स्वच्छता विषय पर प्रभावशाली और विचारोत्तेजक भाषण प्रस्तुत

किए। महावाणिज्य दूतावास की काउंसलर श्रीमती गीतांजलि धर द्वारा विकसित हिंदी शिक्षण एप्प 'संस्कृतिऑनलाइन' का विधिवत शुभारंभ किया गया। बच्चों ने स्वभाव-स्वच्छता और संस्कार-स्वच्छता जैसे मूल्यों को अपनाने का संदेश दिया, जो कार्यक्रम की एक विशेष उपलब्धि रही।

साभार : भारत का प्रधान कोंसलावास, होंगकोंग का फ़ेसबुक पेज

कनाडा

21 सितंबर, 2024 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी राइटर्स गिल्ड कनाडा द्वारा भारतीय कौंसुलावास, टोरंटो के सहयोग से स्प्रिंगडेल लाइब्रेरी में भारतीय कौंसल श्री गिरीश जुनेजा की उपस्थिति में एक साहित्यिक कार्यक्रम हुआ। गिल्ड की संस्थापक डॉ. शैलजा सक्सेना ने संस्था द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु किए गए 16 वर्षों के कार्यों का उल्लेख किया। इस अवसर पर गिल्ड की कार्यकारी सदस्य प्रीति अग्रवाल द्वारा बनाई गई कलाकृति मुख्य अतिथि को भेंट की गई, साथ ही, वरिष्ठ साहित्यकार कृष्णा वर्मा की चार पुस्तकों का लोकार्पण भी हुआ। कार्यक्रम के प्रथम सत्र में बच्चों की प्रस्तुतियाँ हुईं और द्वितीय सत्र में विचार-गोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें प्रमुख वक्ताओं ने 'हिंदी : कल, आज और कल' विषय पर अपने विचार साझा किए। वरिष्ठ लेखक रामेश्वर कांबोज 'हिमांशु' ने भाषा और संस्कृति के संबंध पर प्रकाश डाला। शारजाह की लेखिका अंजू मेहता, टोरंटो की लेखिका आशा बर्मन, भारत से आईं तारा वार्ष्णेय तथा मॉरीशस से आए डॉ. विनय कुमार

गुदारी ने विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी के विकास और तकनीकी योगदान पर जानकारी दी। यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो की प्रो. डॉ. कनिका वर्मा ने “हिंदी मेरे प्रेम की भाषा है” शीर्षक से एक कविता-पाठ किया। 10 वर्षीय छात्रा आयरा श्रीवास्तव ने “हिंदी क्यों ज़रूरी है” विषय पर अपना निबंध प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का समापन पंजाबी भाषी लेखक निर्मल जसवाल राणा के वक्तव्य से हुआ, जिन्होंने हिंदी से अपने प्रेम के चलते पुस्तकों का द्विभाषी प्रकाशन करने की बात कही। कार्यक्रम के अंत में, नि:शुल्क हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसमें लोगों ने रुचि लेकर भाग लिया।

साभार : हिंदी राटर्स गिल्ड, कनाडा का फ़ेसबुक पेज

पारामारिबो, सूरीनाम

14 सितंबर, 2024 को हिंदी दिवस के अवसर पर भारत के राजदूतावास, पारामारिबो में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न अधिकारियों द्वारा हिंदी में स्वरचित एवं प्रसिद्ध कविताओं का पाठ किया गया, जिससे वातावरण भावनाओं, देशप्रेम और भाषा के प्रति सम्मान से भर उठा। राजदूत महोदय ने अपने संबोधन में हिंदी भाषा को जन-जन तक पहुँचाने के प्रयासों की सराहना की और कहा कि हिंदी भारतीय संस्कृति, एकता और विविधता का प्रतीक है। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रवासी भारतीय समुदाय में हिंदी के प्रति जुड़ाव को और प्रगाढ़ बनाना था।

साभार : भारतीय सांस्कृति संबंध परिषद, सूरीनाम का फ़ेसबुक पेज

न्यूज़ीलैंड

24 सितंबर, 2024 को साउथलैंड हिंदी स्कूल, न्यूज़ीलैंड द्वारा हिंदी दिवस इस वर्ष एक भिन्न और विचारोत्तेजक स्वरूप में मनाया गया। इस वर्ष के आयोजन की विशेषता रही एक पैनल चर्चा, जिसमें विदेशों में हिंदी भाषा शिक्षण से जुड़ी चुनौतियों और संभावनाओं पर गंभीर संवाद हुआ। यह आयोजन साउथलैंड माइग्रेंट वॉकिंग टुगेदर के तत्त्वावधान में संपन्न हुआ। पैनल चर्चा का विषय ‘प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ’ रखा गया था, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े विशेषज्ञों और हितधारकों ने भाग लिया। विदेशों में हिंदी सिखाने में आने वाली प्रमुख चुनौतियाँ, अभिभावकों की चिंता - घर में मातृभाषा बनाए रखने का संघर्ष, हिंदी सीखने से बच्चों में बहुभाषिकता, संस्कृति से जुड़ाव और वैश्विक दृष्टिकोण का विकास, स्कूलों में वैकल्पिक भाषाओं के लिए सहयोग, समुदाय आधारित कार्यक्रम, बच्चों को रचनात्मक तरीकों से जोड़ना आदि मुद्दों पर चर्चा हुई। सभी वक्ताओं ने अपने अनुभवों और विचारों को साझा करते हुए इस विषय को गंभीरता से प्रस्तुत किया और सकारात्मक बदलाव के सुझाव भी दिए। इस आयोजन का एक और विशेष आकर्षण था साउथलैंड हिंदी स्कूल के बच्चों द्वारा प्रस्तुत एक रचनात्मक नाटक, जिसमें प्रत्येक बच्चा एक पशु का रूप धारण कर मंच पर आया और उस पशु के बारे में हिंदी में जानकारी दी।

प्रतिवेदन प्रस्तुतकर्ता : हिमानी मिश्रा, प्रधानाध्यापिका, साउथलैंड हिंदी स्कूल, अध्यक्ष, साउथलैंड माइग्रेंट वॉकिंग टुगेदर

कवि-सम्मेलन एवं प्रपत्र-प्रस्तुति

24 जुलाई, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग के तत्त्वावधान में तथा मॉरीश्यन सोसाईटी फ़ोर क्वालिटी कंट्रोल सर्कल्स के सहयोग से कवि-सम्मेलन एवं प्रपत्र-प्रस्तुति का आयोजन विश्व हिंदी सचिवालय, फ़ेनिक्स के सभागार में किया।

उद्घाटन समारोह

कार्यक्रम का विधिवत् शुभारंभ विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी, डॉ. संयुक्ता भोवन रामसारा तथा श्रीमती कल्पना लालजी द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन तथा गोपिका अकादमी ऑफ़ परफ़ॉर्मिंग आर्ट्स, मॉरीशस के कलाकारों द्वारा गणेश वंदना से हुई।

मॉरीशस गणराज्य के लैंगिक समानता और पारिवारिक कल्याण मंत्री, माननीया श्रीमती कल्पना देवी कुंजू-शाह ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। भारतीय उच्चायोग के प्रथम सचिव (अर्थशास्त्र), श्री रंजन कुमार सिंह तथा शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के स्थायी सचिव, श्री युधिष्ठिर मनबोध विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

माननीया श्रीमती कल्पना देवी कुंजू-शाह ने कहा कि शिक्षा पाना और शिक्षित होना दो अलग चीज़ें हैं। शिक्षित होने के लिए हमें अपना धर्म, अपने कर्म, अपनी भाषा और संस्कृति को साथ में रखना होता है, वरना हमारी शिक्षा अधूरी रह जाएगी। उन्होंने कहा कि विनम्रता एक ऐसा गुण है, जिसे अपने जीवन में आत्मसात् करने से हम जीवन के हर क्षेत्र में सफल हो जाएँगे।

श्री रंजन कुमार सिंह ने कहा कि आज का आयोजन न केवल भाषा और साहित्य की दृष्टि से, वरन् भाषा-शिक्षण की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। उन्होंने कहा कि कविता का साहित्य में बहुत बड़ा स्थान है, जो हमारे दिलों से निकलकर भावना के रूप में अभिव्यक्त होती है।

श्री युधिष्ठिर मनबोध ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर अपने संबोधन में कहा कि हमारी शक्ति, हमारी प्रगति और हमारी कामयाबी हमारे धर्म में है, कर्म में है, एकता और सत्संग तथा भाषा और संस्कार में है। उनका विचार है कि कविता में इतनी शक्ति है कि वह समस्त समाज को जागरूक कर सकता है।

कार्यक्रम के आरम्भ में विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने उपस्थित महानुभावों, गण्यमान्य अतिथियों, हिंदी प्रेमियों, शिक्षकों व छात्रों का स्वागत किया।

उन्होंने बताया कि विश्व हिंदी सचिवालय नई पीढ़ी के मन में हिंदी के प्रति प्रेम, आकर्षण और लगाव को बढ़ाने में कार्यरत है। उनके

अनुसार जहाँ हिंदी है, वहाँ प्रगति है। विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने सभी गणमान्य अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया।

द्वितीय सत्र - कवि-सम्मेलन

इस सत्र में भारत तथा मॉरीशस के विभिन्न स्कूलों से पधारे युवा कवियों ने 'राष्ट्रीय एकता और साहित्यिक विरासत' विषय पर अपनी-अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। सर्वप्रथम एन.एच. वर्ल्ड गोयल स्कूल, रायपुर, छत्तीसगढ़ (भारत) के छात्र तनिष्क अग्रवाल एवं ऋषभ अग्रवाल, सनसिटी स्कूल, गुड़गाँव (भारत) से हर्षिता

चौधरी एवं अनक्ष नागपाल, दिल्ली पब्लिक स्कूल, रूद्रपुर (भारत) से सहज खुग्घर एवं वैभव पंत, महात्मा गांधी माध्यमिक स्कूल, मोका (मॉरीशस) से श्रीधा तिवारी एवं प्रेक्षा जगेसर, हिन्दू गर्ल्स कॉलिज, मॉरीशस से केशनी घूरबिन एवं विधि सुकाद्जी, गायताँ रेनाल स्टेट कॉलिज, मॉरीशस से दुशार श्री मुथु कुमार एवं भूमिका रथ तथा अन्य अनेक स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने इस कवि-सम्मेलन में भाग लिया।

तृतीय सत्र - प्रपत्र-प्रस्तुति

भोजनोपरांत, एन.एच. वर्ल्ड गोयल स्कूल, रायपुर, छत्तीसगढ़ (भारत) से श्री मुक्ति नाथ सिंह ने 'गुणवत्ता, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामुदायिक कल्याण' विषय पर पत्र-प्रस्तुति में ग्रीन प्रैक्टिस द्वारा सौर ऊर्जा के प्रयोग तथा पानी के बचाव विषय पर प्रकाश डाला। कैनात इंटरनेशनल स्कूल, बिहार से पधारे श्री शकील अहमद कक्वी ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शिक्षकों के कर्तव्य तथा सामूहिक कल्याण के प्रति अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, मॉरीशस के कार्यवाहक निदेशक, श्री निरंजन बिगन ने प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर हिंदी की स्थिति और हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों की जानकारी साझा की।

हिंदी संगठन के अध्यक्ष, डॉ. उदय नारायण गंगू ने अपने समापन-भाषण में सभी प्रपत्र-प्रस्तोताओं तथा मॉरीशयन सोसाईटी फ़ोर क्वालिटी कंट्रोल सर्कल्स के अध्यक्ष, श्री मधुकर नारायण एवं विश्व हिंदी सचिवालय के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इसी तरह दोनों देशों की संस्कृतियों का आदान-प्रदान होता रहे और हम भारतीय संस्कृति का संरक्षण करते रहें।

पुरस्कार-वितरण समारोह

इस समारोह में जूनियर टीम से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार एन.एच. वर्ल्ड गोयल स्कूल, रायपुर, छत्तीसगढ़ (भारत) से तनिष्क अग्रवाल एवं प्रियंशी मुखर्जी, दिल्ली पब्लिक स्कूल, रुद्रपुर (भारत) से सहज खुग्घर एवं वैभव पंत तथा सनसिटी स्कूल, गुड़गाँव से हर्षिता चौधरी एवं अनक्ष नागपाल ने प्राप्त किया। सीनियर टीम में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर क्रमशः ग्वालियर ग्लोरी हाई स्कूल, ग्वालियर (भारत) से प्रवेश गुंगवानी एवं उन्नति अग्रवाल, मोडर्न पब्लिक स्कूल, शालीमार बाग, नई दिल्ली से अक्षत कंसल एवं अक्षज गुलाटी, एन. एच. वर्ल्ड गोयल स्कूल, रायपुर, छत्तीसगढ़ (भारत) से प्रथम अगरवाल एवं प्रियंशी मुखर्जी आए। सीनियर तथा जूनियर टीम के सर्वश्रेष्ठ वक्ता कैनात इंटरनेशनल स्कूल के शार्जील अहमद कक्वी, दिल्ली पब्लिक स्कूल के सहज खुग्घर रहे।

मॉरीशयन सोसाईटी फ़ोर क्वालिटी कंट्रोल सर्कल्स के अध्यक्ष तथा वर्ल्ड काउंसिल फ़ोर टोटल क्वालिटी एंड एक्सीलेंस इन एजुकेशन के उपाध्यक्ष श्री मधुकर नारायण ने मॉरीशस एवं भारत से आए स्कूलों के विजेता छात्र-छात्राओं व शिक्षकों के प्रति आभार प्रदर्शित किया। कार्यक्रम के सभी सत्रों का संचालन, विश्व हिंदी सचिवालय के वरिष्ठ सहायक संपादक, श्री प्रकाश वीर द्वारा किया गया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व रंग 2024 - मॉरीशस

विश्व हिंदी सचिवालय (शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय एवं भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्त्वावधान में) विश्वरंग सचिवालय (भारत), रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (भारत) और टैगोर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (भारत), टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केंद्र (भारत), महात्मा गांधी संस्थान एवं रबींद्रनाथ टैगोर संस्थान (मॉरीशस), हिंदी स्पीकिंग यूनियन (मॉरीशस), हिंदी प्रचारिणी सभा (मॉरीशस), इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र (मॉरीशस), मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन (मॉरीशस), वनमाली सृजन पीठ (भारत) और 50 से अधिक संस्थाओं के सहयोग से विश्व रंग 2024 का भव्य आयोजन दिनांक 7-9 अगस्त तक विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस में हुआ।

उद्घाटन-सत्र

भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंगला, विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी, श्रीमती विनीता चौबे, डॉ. पुष्पा असिवाल, सुश्री ज्योति रघुवंशी तथा महात्मा गांधी संस्थान की रजिस्ट्रार श्रीमती उमा देवी कॉलेसर द्वारा दीप-प्रज्जवलन से कार्यक्रम का विधिवत् उद्घाटन किया गया। तत्पश्चात्, राजस्थान के रंगों से सराबोर घूमर लोक नृत्य प्रस्तुत किया गया। मंगलाचरण में गुंदेचा बंधुओं (उमाकांत तथा रमाकांत) द्वारा ध्रुपद गायन शैली में शिव वंदना प्रस्तुत किया गया। तदुपरांत, विश्व रंग पर केंद्रित फ़िल्म का प्रदर्शन किया गया। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ.

माधुरी रामधारी ने मॉरीशस और अन्य देशों के प्रतिनिधियों के प्रति आभार प्रकट किया। अपने स्वागत संबोधन में उन्होंने कहा कि विश्व रंग का उद्देश्य हिंदी भाषा, साहित्य, भारतीय कला और संस्कृति को बढ़ावा देना है।

विश्व रंग के सह-निदेशक तथा रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलपति, डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने कहा कि कला, संस्कृति और साहित्य हमारी जीवनशक्ति है। उन्होंने कहा कि कला हमें सुंदरता की तरफ़ ले जाती है, संस्कृति हमें अपनी जड़ों से जोड़ती है और साहित्य हमें जीवन मूल्यों की याद दिलाता है।

विश्व रंग के निदेशक संतोष चौबे ने कहा कि हिंदी विश्व की तीसरी भाषा के रूप में जानी जाती है और वे पिछले 40 वर्षों से हिंदी के संरक्षण और प्रचार में कार्यरत हैं। उन्होंने बताया कि कला, संस्कृति, साहित्य और भाषा में मनुष्य को बदलने की ताकत है।

भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्रीमती के. नंदिनी सिंगला ने कहा कि मॉरीशस में इस समारोह का आयोजन साहित्य, कला और संस्कृति के केंद्र में होना गर्व की बात है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि रबींद्रनाथ टैगोर की प्रतिमा के अनावरण से दोनों संस्थाओं में विचार-विनिमय और शैक्षिक संबंधों की शुरुआत होगी, जिससे भारत-मॉरीशस संबंधों को और मज़बूती मिलेगी।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के पूर्व अध्यक्ष, डॉ. विनय सहस्रबुद्धे ने अपने संदेश में कहा कि इस आयोजन के कई मायने हैं, कई संदेश हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं है, हिंदी एक जीवन दृष्टि है, मनुष्यता की तरफ़ देखने का एक नज़रिया है।

विश्वरंग के प्रति अपने शुभकामना संदेश में भारत सरकार के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने विचार प्रकट किया कि हिंदी भारत की ही नहीं, बल्कि विश्वभर के लोगों के लिए विशेष महत्त्व रखती है। यह लोगों से संवाद करने और स्वयं को अभिव्यक्त करने में हमारी मदद करती है। उन्होंने बताया कि एक भाषा के रूप में हिंदी हमारी सांस्कृतिक और भाषिक पहचान है, जो हमें इतिहास और विरासत से जोड़ती है।

साहित्य, कला और संस्कृति के इस वैश्विक सम्मेलन में माननीय उपप्रधानमंत्री श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन ने गर्व प्रकट किया कि 'विश्व रंग' के लिए मॉरीशस को चुना गया। उन्होंने बताया कि मॉरीशस में स्कूली स्तर से पीएच.डी. तक हिंदी की पढ़ाई की सुविधा उपलब्ध है तथा यहाँ 300 से अधिक बैठकाओं में 11 हज़ार बच्चे शाम के समय या सप्ताहांत में हिंदी सीखते हैं।

इस अवसर पर डॉ. जवाहर कर्नावट तथा संजय राठौड़ द्वारा संपादित 'विश्व में हिंदी' एवं '11 देशों के प्रवासी हिंदी साहित्य', 'मॉरीशस के उभरते रचनाकार' एवं डॉ. सोमदत्त काशीनाथ के बाल नाट्य संग्रह 'एक छोटी सी मदद : बिना स्वार्थ की' तथा डॉ. संजय पाण्डेय द्वारा सम्पादित 'प्रवासी संसार' का लोकार्पण किया गया। विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया तथा इस सत्र का संचालन श्री विनय उपाध्याय ने किया।

वैचारिक सत्र

भारतीय संस्कृति और भाषाओं के प्रचार-प्रसार में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की भूमिका के संबंध में डॉ. विनय सहस्रबुद्धे ने श्री संतोष चौबे के साथ संवाद में बताया कि भाषा संस्कृति की संवाहक होती है और किसी भी देश के इतिहास, संस्कृति और परंपराओं को समझना है, तो सबसे पहले भाषा को समझना ज़रूरी है।

सांस्कृतिक सत्र

सांस्कृतिक सत्र में नोत्र दाम कालीमाता मंदिर (मॉरीशस) के कलाकारों द्वारा 'आ जा लग जा गले नंदलाल की आई आज होली है' तथा महात्मा गांधी संस्थान के कलाकारों द्वारा 'तेरे चरणन के बलिहार बहे सपियारे' नामक होली गीत प्रस्तुत किया गया। कालीमाता मंदिर के प्रमुख भीमसेन माताबदल तथा महात्मा गांधी संस्थान के कलाकार अक्षय जूरन को 2024 का स्मृति-चिह्न तथा अन्य कलाकारों को पुष्प भेंट कर उनका स्वागत किया गया।

इसके बाद क्षमा मालवीय के निर्देशन तथा संयोजन में 'होरी हो ब्रजराज' : ब्रज के होली गीतों की रंगारंग प्रस्तुति हुई। इस गीत की प्रस्तुति में अपूर्व मिश्रा ने कृष्ण की भूमिका निभाई। अन्य कलाकारों में प्रियांशी कटारिया, प्रेक्षा नेमा, जसमीन कौर, मोक्षा जैन, अवनि राय, त्वरिता जैन, राधिका ताम्रकर, अवनीश सिंह, वंशिका टिकाड़े, अन्वंशिता सिंह तथा वैदिका ने उनका साथ दिया।

द्वितीय दिवस

द्वितीय दिवस की शुरुआत प्रधान संपादक, श्री मुकेश वर्मा तथा संपादक, श्री कुणाल सिंह द्वारा अभिमन्यु अनत के साहित्य-सृजन पर विशेषांक तथा विश्व रंग के कैटेलॉग का लोकार्पण किया गया। इस सत्र में, 'अभिमन्यु अनत - विश्व साहित्य चेतना के रचनाकार' विषय पर चर्चा की गई। जापान से डॉ. वेद प्रकाश सिंह, मॉरीशस से डॉ. संयुक्ता भोवन रामसारा तथा भारत से डॉ. अच्युतानंद मिश्र ने इस वैचारिक सत्र में भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय कविता-पाठ

अंतर्राष्ट्रीय कविता-पाठ में सर्वप्रथम सुश्री नीलेश रघुवंशी, श्रीमती सविता भार्गव, श्री

बलराम गुमास्ता, डॉ. जितेन्द्र श्रीवास्तव, श्री लीलाधर मंडलोई, श्री संतोष चौबे, श्री बद्री नारायण, डॉ. हेमराज सुंदर, डॉ. बीरसेन जगासिंह तथा श्रीमती विनीता तिवारी ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। इसके बाद, 'भोजपुरी भाषा एवं साहित्य के विविध आयाम', 'विश्व के देशों में हिंदी : स्थिति और संभावनाएँ (नई पीढ़ी के संदर्भ में)' तथा 'हिंदी में विज्ञान लेखन - चुनौतियाँ और संभावनाएँ' विषय पर समानांतर-सत्र आयोजित किए गए।

हिंदी की विश्व चेतना और साहित्य

इस सत्र में 'विश्व रंग संवाद' नामक पुस्तक का लोकार्पण किया गया। इसके साथ ही, 'हिंदी का वैश्विक प्रसार और जनसंचार माध्यम', 'अंतर्राष्ट्रीय रचना-पाठ' विषय पर समानांतर-सत्र आयोजित किए गए।

तृतीय दिवस

तृतीय दिवस की शुरुआत सुब्रतो सेन, ऋतुपर्णा बैनर्जी एवं नीलांशु दत्ता के बाउल संगीत (मंगलाचरण) की प्रस्तुति से हुई। इसके उपरांत रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश के प्रो. अमिताभ कुमार ने हिंदी भाषा लर्निंग सॉफ़्टवेयर 'हिंदी भाषा अर्जन पाठ्यक्रम, नींव', विश्व रंग के निदेशक श्री संतोष चौबे ने वैश्विक स्तर पर हिंदी शिक्षण की रूपरेखा तथा श्री विजय सिंह ने पीएच.डी. पाठ्यक्रमों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

कृत्रिम मेधा : हिंदी और भविष्य की चुनौतियाँ

इस सत्र की शुरुआत महीप निगम (भारत) के कृत्रिम मेधा हिंदी और भविष्य की चुनौतियाँ विषय पर वक्तव्य से हुई। श्री प्रियदर्शन ने इसकी अध्यक्षता तथा विकास अवस्थी ने इसका संचालन किया। इस सत्र में यतीन्द्र चतुर्वेदी द्वारा रचित 'पाइथन' नामक कंप्यूटर पर आधारित पुस्तक का विमोचन किया गया।

पूर्व रंग में आयोजित प्रतियोगिताओं का पुरस्कार-वितरण-समारोह

हिंदी स्पीकिंग यूनियन द्वारा गीत-गायन प्रतियोगिता के विजेताओं में होया देवी दाओसिंह तथा अभिनय दाओसिंह को प्रथम (3000 मॉरीशियन रुपए तथा प्रशस्ति-पत्र), हिमेश गुरापा तथा दीया सीरतन को द्वितीय (2000 मॉरीशियन रुपए तथा प्रशस्ति-पत्र) तथा रेशमी साधुजी को तृतीय (1000 मॉरीशियन रुपए) पुरस्कार प्रदान किया गया।

हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा आयोजित कविता-वाचन प्रतियोगता में गोपी राने ने तृतीय पुरस्कार, बुर्त रोनबे ने द्वितीय पुरस्कार तथा कोरी हेमंती ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। पठन प्रतियोगिता में टोनी गाडु दीपशिखा ने तृतीय, श्रेया गुप्ता ने द्वितीय तथा चिरकुट सिरनजी ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में माधवी रवि शर्मा ने तृतीय, चिंता रामललीना ने द्वितीय तथा भगीरथ कालेरा ने प्रथम पुरस्कार तथा प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र प्राप्त किया।

तत्पश्चात्, पं. तिलकराज शर्मा न्यास (अमेरिका) द्वारा हिंदी स्पीकिंग यूनियन के प्रधान, हिंदी के समर्पित कार्यकर्ता, डॉ. उदय नारायण गंगू को एक लाख ग्यारह हज़ार रुपए, स्वर्ण पदक तथा सम्मान-पत्र प्रदान किया गया। साथ ही, विभिन्न सत्रों में भाग लेने वाले प्रवासी लेखकों को मॉरीशस के पर्यटन विभाग की ओर से भेंट, स्मृति-चिह्न तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

इन तमाम सत्रों का संचालन श्री विनय उपाध्याय द्वारा किया गया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

सम्मेलन, संगोष्ठी, कार्यशाला, प्रतियोगिता

कैरेबियाई क्षेत्र में हिंदी को बढ़ावा देने हेतु अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन

6 सितंबर, 2024 को महात्मा गांधी सांस्कृतिक सहयोग संस्थान, माउंट होप, त्रिनिदाद एवं टोबैगो में अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि त्रिनिदाद एवं टोबैगो सरकार की मंत्री एवं सीनेटर, माननीया श्रीमती रेणुका सागरमसिंह-सूकलाल रहीं, जो अटॉर्नी जनरल कार्यालय एवं विधि मंत्रालय का प्रतिनिधित्व कर रही थीं। सम्मेलन का उद्देश्य कैरेबियाई क्षेत्र में हिंदी भाषा और इसकी सांस्कृतिक परंपराओं को बढ़ावा देना था, जो भारत और त्रिनिदाद एवं टोबैगो के बीच सुदृढ़ संबंधों का आधार रही है। भारतीय उच्चायोग ने राष्ट्रीय भारतीय संस्कृति परिषद्, त्रिनिदाद एवं टोबैगो हिंदी फ़ाउंडेशन तथा राष्ट्रीय पुस्तकालय एवं सूचना प्रणाली प्राधिकरण के सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया। सम्मेलन में गयाना, सूरीनाम, भारत एवं त्रिनिदाद से आए हिंदी विद्वानों और हिंदी प्रेमियों की उल्लेखनीय भागीदारी रही।

साभार : सूरीनाम हिंदी परिषद्, सूरीनाम का फ़ेसबुक पेज

सिंगापुर में 'दक्षिण-पूर्व एशिया में हिंदी' विषयक अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन

16 सितंबर, 2024 को सिंगापुर में स्थित नेशनल यूनिवर्सिटी के कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के भाषा अध्ययन केंद्र द्वारा 'दक्षिण-पूर्व एशिया में हिंदी : विकास की नवप्रवर्तन दिशाएँ' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का

आयोजन किया गया, जिसकी अगुवाई भारतीय भाषा केंद्र की प्रमुख डॉ. संध्या सिंह और उनकी टीम ने की। सम्मेलन में भारत, सिंगापुर, वियतनाम, मलेशिया, थाईलैंड, मॉरीशस और ब्रिटेन सहित विभिन्न देशों से हिंदी के विद्वानों, शिक्षकों और साहित्यकारों ने भाग लिया। इस अवसर पर भारतीय उच्चायुक्त डॉ. शिल्पक अंबुले, भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री रवि जायसवाल, विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी, केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे और रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति एवं 'विश्वरंग' के निदेशक श्री संतोष चौबे उपस्थित थे। डॉ. संध्या सिंह और श्री संतोष चौबे को 'विश्व हिंदी शिखर सम्मान' से सम्मानित किया गया। सम्मेलन में हिंदी भाषा, प्रवासी साहित्य, मीडिया, कृत्रिम मेधा आधारित शिक्षण, अनुवाद, द्वितीय भाषा शिक्षण, अध्यापक प्रशिक्षण आदि विषयों पर सार्थक परिचर्चाएँ हुईं। सम्मेलन में, अगला विश्व हिंदी सम्मेलन सिंगापुर में आयोजित किए जाने का प्रस्ताव रखा गया। प्रतिभागियों में प्रो. वी.रा. जगन्नाथन, दिव्या माथुर, डॉ. पद्मा सवांगश्री, डॉ. जवाहर कर्नावट, डॉ. जमुना बीनी, प्रो. शीतांशु कुमार और शशिशिरि सुवर्णदिव्य सहित कई प्रतिष्ठित नाम शामिल थे। आराधना झा श्रीवास्तव के संचालन में एक कवि-गोष्ठी हुई, जिसमें लगभग 23 कवियों ने काव्य-पाठ कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। सम्मेलन के अंत में हिंदी-शिक्षण और प्रचार के लिए कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव जैसे द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी-शिक्षण के लिए पृथक व्याकरण पुस्तक की रचना, शिक्षकों हेतु मार्गदर्शिका निर्माण, कृत्रिम मेधा आधारित हिंदी शिक्षण हेतु रूपरेखा, पाठ्यक्रम को व्यावहारिक और रोज़गारोन्मुख बनाना, डिजिटल माध्यमों में हिंदी शिक्षण सामग्री को उपलब्ध कराना, 'भारतीय भाषा महोत्सव' का वार्षिक आयोजन करना और दक्षिण-पूर्व एशिया हिंदी प्रवासी साहित्यकार संस्था की स्थापना करना। इस सम्मेलन ने क्षेत्रीय सहयोग को सुदृढ़ किया और हिंदी के वैश्विक प्रसार को नई दिशा दी।

साभार : सिंगापुर संगम का फ़ेसबुक पेज

एक दिवसीय यू.के. हिंदी सम्मेलन

11 सितंबर, 2024 को भारतीय उच्चायोग, लंदन और भवन लंदन के संयुक्त तत्त्वावधान में भवन लंदन परिसर में एक दिवसीय यू.के. हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन माननीय उच्चायुक्त श्री विक्रम दोरेस्वामी एवं भवन के अध्यक्ष श्री सुभानु सक्सेना द्वारा किया गया। सम्मेलन में यू.के. में हिंदी भाषा की चुनौतियाँ एवं प्रयास, हिंदी सिनेमा का हिंदी भाषा के प्रचार में योगदान एवं प्रवासी भारतीय साहित्यकारों के योगदान जैसे मुद्दों पर चर्चा हुई। कार्यक्रम का समापन विभिन्न भारतीय नृत्य शैलियों में भारतीय कवियों की रचनाओं की सुन्दर प्रस्तुतियों से हुआ।

साभार : भारतीय उच्चायोग, लंदन का इन्सटाग्राम पेज

वातायन-यूरोप संगोष्ठी में दो देशों की दो मार्मिक कहानियाँ प्रस्तुत

17 अगस्त, 2024 को वातायन-यूरोप प्रवासी संगोष्ठी की 201वीं श्रृंखला के अंतर्गत 'दो देश दो कहानियाँ' (भाग 16) शीर्षक से एक ऑनलाइन साहित्यिक संगोष्ठी संपन्न हुई। कार्यक्रम की शुरुआत कनाडा की वरिष्ठ लेखिका शैलजा सक्सेना द्वारा स्वागत-भाषण के साथ हुई। कनाडा के चर्चित लेखक समीर लाल और पुर्तगाल की प्रतिष्ठित लेखिका पंखुरी सिन्हा ने अपनी कहानियों का पाठ किया। समीर लाल की कहानी 'यह नंबर अब सेवा में नहीं है' दो सहेलियों की दोस्ती और उनके जीवन में आए बदलावों को संवेदनशीलता से दर्शाती है। पंखुरी सिन्हा की कहानी 'एक अनानास' घरेलू हिंसा और स्त्री-जीवन की त्रासदी को मार्मिक रूप में प्रस्तुत करती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं सुप्रसिद्ध लेखिका नासिरा शर्मा ने दोनों कहानियों की गहन समीक्षा करते हुए कहा कि ये रचनाएँ समकालीन स्त्री-जीवन की जटिलताओं, सामाजिक संघर्षों और आंतरिक पीड़ाओं को प्रभावशाली ढंग से उजागर करती हैं। संगोष्ठी का संचालन आईटी इंजीनियर एवं लेखक अभिषेक त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर रूस की लेखिका प्रो. उल्फ़त मुखिबोवा, जापान से प्रो. तोमियो मिज़ोकामी, यूक्रेन से यूरी, भारत से श्रीमती सुनिता पाहूजा सहित विश्व के अनेक देशों के वरिष्ठ साहित्यकारों और हिंदी प्रेमियों ने सहभागिता की। संगोष्ठी दिव्या माथुर के सान्निध्य में अत्यंत सफल और प्रभावपूर्ण रही।

साभार : हिंदी राइटर्स गिल्ड, कनाडा का फ़ेसबुक पेज

दुबई में बहुभाषी काव्य-गोष्ठी

31 अगस्त, 2024 को 'रेवाक ऊषा एजुकेशनल इंस्टीट्यूट' कुसैस, दुबई के 'कल्चरल हॉल' में एक अनोखी बहुभाषी कविता उत्सव 'पोएट्री ऑफ़ द डेज़र्ट' का आयोजन किया गया। 'अक्षराकोट्टम' जिसका अर्थ है अक्षरों का समूह, ऐसी संस्था की स्थापना की रजत जयंती के अवसर पर 7 भिन्न भाषाओं - हिंदी, पंजाबी, मलयालम, तमिल, उर्दू, अरबी व अंग्रेज़ी की कविताओं की शानदार प्रस्तुति हुई। सबके समझने के लिए उन कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद भी स्क्रीन पर साथ-साथ चलाया गया। कार्यक्रम के आयोजक इस्माइल मेलादी थे। काव्य-रस की फुहार 'पोएट्री ऑफ़ द डेज़र्ट' ने रेगिस्तान में मधुर रस की फुहारें बरसा दीं।

साभार : डॉ. आरती लोकेश का फ़ेसबुक पेज

देवास में 'एक लेखक और उसका संसार' कार्यक्रम

14 जुलाई, 2024 को मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन, ज़िला इकाई देवास द्वारा ' 'क' कहानी का' श्रृंखला के अंतर्गत 'एक लेखक और उसका संसार' विषय पर एक विशेष साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन ईटी सभागार में किया गया। वरिष्ठ साहित्यकार श्री गोविन्द मिश्र एवं कथाकार सुश्री उर्मिला शिरीष वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। तीन सत्रों में विभाजित इस आयोजन में कहानी-लेखन की प्रक्रिया, उसकी संवेदनात्मकता, शिल्प और विषय चयन जैसे पहलुओं पर गहन चर्चा हुई। दोनों वक्ताओं ने श्रोताओं के सवालों के सहज, स्पष्ट और विचारोत्तेजक उत्तर दिए। वरिष्ठ लेखक गोविन्द मिश्र ने कहा कि, "लेखक को यह पता होना चाहिए कि क्या नहीं लिखना है। उपन्यास-लेखन के दौरान लेखक को बार-बार स्वयं से पूछना चाहिए कि वह कहना क्या चाहता है।" उन्होंने रचना में शीर्षक, पात्रों, भाषा-प्रयोग और आत्म-समीक्षा के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला। उर्मिला शिरीष ने गोविन्द मिश्र की जीवनी

'बयावाँ में बहार' की रचना-प्रक्रिया की चर्चा करते हुए कहा कि "एक लेखक को सबसे पहले एक संवेदनशील मनुष्य होना चाहिए, तभी उसकी रचना में प्रेम, करुणा और आत्मीयता के बीज पनप सकते हैं।" रचना का उद्देश्य केवल कथ्य नहीं, बल्कि दुनिया को सुंदर बनाने का स्वप्न भी होना चाहिए। इस आयोजन में बड़ी संख्या में युवा व वरिष्ठ साहित्यकारों, विद्यार्थियों व लेखन में रुचि रखने वाले नागरिकों की सहभागिता रही। कार्यक्रम ने साहित्यिक संवाद की एक जीवंत मिसाल प्रस्तुत की।

आभार : प्रतिवेदन प्रस्तुतकर्ता - हिमांशु कुमावत, मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन, ज़िला इकाई - देवास

रोपड़ में हिंदी कार्यशाला

16 अगस्त, 2024 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) रोपड़ के हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा अनुवादिनी सॉफ़्टवेयर के संदर्भ में एक आभासी हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में विषय-विशेषज्ञ के रूप में श्री अंकुर विजयवर्गीय, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं जनसंपर्क अधिकारी, भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली को आमंत्रित किया गया।

श्री विजयवर्गीय ने राजभाषा विभाग द्वारा विकसित 'अनुवादिनी' सॉफ़्टवेयर की विशेषताओं का परिचय दिया और उसका सजीव प्रदर्शन भी किया, जिसमें सॉफ़्टवेयर को डाउनलोड करने, स्थापित करने तथा प्रयोग में लाने की प्रक्रिया को विस्तार से समझाया गया। उन्होंने कहा कि हिंदी में कार्यान्वयन के लिए अनुवाद एक प्रभावी माध्यम है। राजभाषा विभाग द्वारा 'अनुवादिनी' जैसे उपकरण विकसित किए गए हैं, जो सहज, व्यावहारिक और उपयोगकर्ता-मित्र हैं। वरिष्ठ हिंदी अनुवाद अधिकारी डॉ. गिरीश प्रमोदराव कठाणे द्वारा कार्यशाला का सफल संचालन किया गया तथा कार्य एवं संपदा अनुभाग के सहायक अभियंता श्री अभिनव राज के धन्यवाद-ज्ञापन के साथ समापन हुआ।

साभार : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), रोपड़ की आधिकारिक वेबसाइट

एनसीएल, पुणे में अंतरकार्यालयीन हिंदी तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता

9 जुलाई, 2024 को सीएसआईआर, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल), पुणे में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-2), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के तत्त्वावधान में अंतरकार्यालयीन हिंदी तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता हुई। पुणे स्थित विभिन्न केंद्रीय संस्थानों के प्रतिभागियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एनसीएल के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेश गोन्नाड़े ने की। मुख्य अतिथि एवं निर्णायक के रूप में सी-डैक, पुणे के संयुक्त निदेशक डॉ. सुधीर कुमार मिश्र तथा एनसीएल की हिंदी अधिकारी एवं नराकास (का.-2) पुणे की सचिव, डॉ. स्वाति चढ्ढा उपस्थित रहीं। डॉ. स्वाति चढ्ढा ने प्रतियोगिता के नियमों की जानकारी दी। इसके उपरांत भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे के सदस्यों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। डॉ. राजेश गोन्नाड़े ने प्रतियोगिता के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि राजभाषा हिंदी के माध्यम से सभी संस्थानों के कार्यकर्ता एक साझा मंच पर एकत्र होते हैं, जिससे न केवल भाषा का विकास होता है, बल्कि कर्मचारियों की प्रतिभा को भी नई दिशा मिलती है। डॉ. सुधीर कुमार मिश्र ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएँ आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद-ज्ञापन से हुआ और संपूर्ण संचालन डॉ. स्वाति चढ्ढा ने किया।

साभार : सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल), पुणे की आधिकारिक वेबसाइट

आभासी कार्यक्रम

हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि

6 जुलाई, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने **'हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 15'** का आयोजन किया, जिसमें हिंदी परिषद्, नीदरलैंड से उर्सिला जरबन्धन ने 'ईदगाह' कहानी पर अपने विचार रखे। न्यू मिलिनयम स्कूल, बहरीन से हरप्रिया एस. पी. ने कैफ़ी आज़मी की कविता 'कर चले हम फ़िदा' प्रस्तुत की और ड्यूक यूनिवर्सिटी, अमेरिका से प्रिशा गुप्ता ने स्वरचित कविता का वाचन किया। बहरीन की शिक्षिका श्रीमती हेमा एस. के ने अभिनय कला, अंतर्कक्षा एवं अंतविर्द्यालयी प्रतियोगिताओं के माध्यम से छात्रों में साहित्य

के प्रति रुचि बढ़ाने की बात की। डॉ. ऋतु शर्मा ननन पांडे ने नीदरलैंड में परिचय, प्रथमा, मध्यमा, मंजूषा, कोविद तथा हिंदी रत्न की शिक्षा पर प्रकाश डाला और अमेरिका से डॉ. कुसुम नैपसिक ने ड्यूक यूनिवर्सिटी, अमेरिका में विज्ञापन-पठन और कविता या कहानी की कार्यशाला की चर्चा की। अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. पवन अग्रवाल ने छात्रों को ई-बुक्स, ई-पत्रिकाएँ और कार्टून उपलब्ध कराने का सुझाव दिया। स्वागत-भाषण विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने किया और उपमहासचिव डॉ. शुभांकर मिश्र ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

(‘हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि’ आभासी कार्यक्रम के सभी संस्करण विश्व हिंदी सचिवालय के औपचारिक यूट्यूब चैनल : HTTPS://WWW.YOUTUBE.COM/@WORLDHINDISECRETARIAT पर उपलब्ध हैं।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

हिंदी में अभिव्यक्ति

20 जुलाई, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने **‘हिंदी में अभिव्यक्ति - भाग 15’** का आयोजन किया, जिसमें इंडियन लैंग्वेज स्कूल, लागोस, नाइजीरिया से लविशा मेहता ने सोशल मीडिया पर मातृभाषा में संदेश भेजने की बात की। भवंस त्रिपुरा विद्या मंदिर, त्रिपुरा, भारत से अभिप्राय राय ने रहीम के दोहों का वाचन किया और महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस से मीनाक्षी देवी दोमा ने कहा कि हिंदी हमें अपनी जड़ों से जोड़ती है। नाइजीरिया से श्रीमती निर्मला गोयल ने उल्लेख किया कि स्कूलों में छात्रों को रोज़ हिंदी के नए शब्द सिखाए जाते हैं। भारत से श्रीमती प्रिया राय ने उच्चारण के महत्त्व को उजागर किया। महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस से प्रो. राज शेखर ने कहा कि भाषा की शुद्धता केवल व्याकरण पढ़ने से नहीं, बल्कि लिखने की प्रक्रिया से होती है। प्रो. जी. गोपीनाथन ने विचार व्यक्त किया कि ऊँची आवाज़ में पढ़ने और प्रश्नोत्तर करने से छात्र भाषा को बेहतर समझ पाते हैं। उपर्युक्त आभासी कार्यक्रमों में स्वागत-वक्तव्य विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने दिया, आभार-ज्ञापन उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने किया और मंच-संचालन वरिष्ठ सहायक सम्पादक, श्री प्रकाश वीर ने किया।

(‘हिंदी में अभिव्यक्ति’ आभासी कार्यक्रम के सभी संस्करण विश्व हिंदी सचिवालय के औपचारिक यूट्यूब चैनल : HTTPS://WWW.YOUTUBE.COM/@WORLDHINDISECRETARIAT पर उपलब्ध हैं।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

साक्षात्कार

15 जुलाई, 2024 को मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा ‘हँसी-हँसी में हिंदी’ पुस्तक पर ‘क्षितिज’ रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किया गया। पुस्तक के लेखक श्री केसन बधु इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने बताया कि हिंदी के प्रति बच्चों में रुचि पैदा करने के लिए इस पुस्तक को लिखा गया है। इसमें रंगीन तस्वीरों के माध्यम से मोटे-मोटे अक्षरों से हिंदी सिखाने की कोशिश की गई है। पारिवारिक माहौल में बच्चे आसानी से हिंदी सीख सकें, यही इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य है। यह पुस्तक हिंदी तथा अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में है। इसमें संवाद के माध्यम से बच्चों को हिंदी बोलने के साथ-साथ लिखने के लिए भी प्रेरित किया गया है। श्रीमती अश्विना देवी हेमू ने इस साक्षात्कार के लिए श्री केसन बधु के प्रति आभार प्रकट किया।

12 अगस्त, 2024 को ‘हिंदी सीखने से जुड़ी चुनौतियाँ’ विषय पर ‘क्षितिज’ कार्यक्रम के अंतर्गत स्वतंत्र हिंदी परामर्शदाता, केम्ब्रिज इंटरनेशनल, यू.के., डॉ. अरुणा अजितसरिया, एम.बी.ई. का साक्षात्कार लिया गया। डॉ. अरुणा अजितसरिया ने बताया कि बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए उनका द्विभाषी होना बहुत महत्त्वपूर्ण है। हिंदी सीखने में छात्रों को होने वाली कठिनाइयों के संबंध में उन्होंने सुझाव दिया कि कक्षा से निकलते समय आवश्यक है कि छात्र हिंदी को कक्षा में छोड़कर न जाएँ, अपितु कक्षा के बाहर अपने सहपाठियों से हिंदी में बात करें। कोई भी भाषा अभ्यास से ही अपनी बनती है। श्रीमती कल्पना लालजी ने इस साक्षात्कार के लिए डॉ. अरुणा अजितसरिया के प्रति आभार प्रकट किया।

26 अगस्त, 2024 को ‘क्षितिज’ रेडियो कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी प्रचारिणी सभा की प्रधाना, श्रीमती रोहिणी रामरूप का साक्षात्कार लिया गया। हिंदी प्रचारिणी सभा के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि हिंदू संस्कृति के संरक्षण हेतु सन् 1923 में हिंदू संगठन सभा की स्थापना की गई थी। इसके बाद 12 जून, 1926 को हिंदू संगठन सभा का नाम बदलकर तिलक विद्यालय कर दिया गया। आगे चलकर 26 दिसंबर, 1935 को तिलक विद्यालय का नाम हिंदी प्रचारिणी सभा कर दिया गया। हिंदी प्रचारिणी सभा कविता-वाचन, श्रुतलेख प्रतियोगिता, निबंध-लेखन, कहानी-कथन, गीत-गायन प्रतियोगिता तथा अन्य गतिविधियों के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार करती है। 8 नवंबर, 2023 को हिंदी प्रचारिणी सभा की शताब्दी मनाई गई। हिंदी प्रचारिणी सभा में नयापन लाने के लिए हिंदू युवा संगठन भी बना है। श्रीमती अश्विना देवी हेमू ने इस साक्षात्कार के लिए श्रीमती रोहिणी रामरूप को धन्यवाद-ज्ञापित किया।

9 सितंबर, 2024 को ‘क्षितिज’ रेडियो कार्यक्रम में अजमेर लेखिका मंच, भारत की अध्यक्षा एवं हिंदी साहित्यकार डॉ. मधु खंडेलवाल से बातचीत की गई। उन्होंने स्पष्ट किया कि अजमेर लेखिका मंच में वर्तमान में 109 महिला साहित्यकार जुड़ी हुई हैं। इनमें 30-35 लेखिकाओं की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अजमेर लेखिका मंच महिलाओं को हिंदी में साहित्य-सृजन करने का प्रोत्साहन देता है और उनकी रचनाओं के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करता है। डॉ. शशि दुकन ने इस साक्षात्कार के लिए डॉ. मधु खंडेलवाल के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

(विभिन्न देशों के हिंदी विद्वानों के साक्षात्कार विश्व हिंदी सचिवालय की औपचारिक वेबसाइट HTTPS://VISHWAHINDI.COM/NEW/# के ‘ओडिओ’ भाग पर उपलब्ध है।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

लोकार्पण

अलका सिन्हा की डायरी पुस्तक 'रूहानी रात और उसके बाद' का लोकार्पण और परिचर्चा

31 अगस्त, 2024 को राजधानी स्थित साहित्य अकादेमी सभागार में अलका सिन्हा की डायरी पुस्तक 'रूहानी रात और उसके बाद' का लो-कार्पण और पुस्तक परिचर्चा का आयोजन किया गया। सुविख्यात चिंतक, समीक्षक एवं महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. गिरिश्वर मिश्र ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि अलका सिन्हा की डायरी अनेक विधाओं को साथ लिए चलती है और समग्रता में यह डायरी कहानी का सा आनंद देती है। इसमें लंबी यात्राएँ हैं, तो कोविड जैसे जीवन के कठिन प्रसंग भी शामिल हैं।

समीक्षक एवं सहायक प्रोफेसर चैताली सिन्हा ने देश-विदेश में डायरी लेखन के आरंभिक सूत्रों का संधान करते हुए परिचर्चा का आरंभ किया और भारत के विभिन्न साहित्यकारों द्वारा लिखी गई डायरी का उल्लेख किया। उन्होंने 'रूहानी रात और उसके बाद' को डायरी लेखन की परम्परा की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी बताया। मुख्य वक्ता के रूप में आलोचक प्रो. सत्यकेतु सांकृत ने डायरी लेखन की विधागत विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि मोबाइल-इंटरनेट के बाद पत्र-लेखन समाप्त होता गया है और डायरी केन्द्र में आती गई है। संवाद के मशीनी साधन उपलब्ध हो जाने के बाद से संवाद की दिशा अंतर्मुखी हो गई है। डायरी में निजता की भाषा होती है और यह एक तरह का अंतरालाप है। अलका सिन्हा की विवेच्य पुस्तक में यह अंतरालाप तन्मयता से व्यक्त हुआ है। उन्होंने पुस्तक में यात्रा पर आधारित संस्मरणों की ओर इंगित करते हुए उसके कुछ विचारोत्तेजक और मार्मिक प्रसंगों का उल्लेख किया। मुख्य अतिथि के रूप में कवि एवं आलोचक प्रो. जितेन्द्र श्रीवास्तव ने पुस्तक में वर्णित अनुभवों का गंभीरता से विश्लेषण करते हुए इस बात को रेखांकित किया कि इस पुस्तक में संश्लिष्ट जीवन का कोई रोना नहीं रोया गया है, बल्कि संश्लिष्टता के बीच जो सुंदर है, उसे बचा लेने की जद्दोजहद है। लेखिका अलका सिन्हा ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि उनके लेखन की शुरुआत चिट्ठियों से हुई थी और डायरी के ये पन्ने उन्हीं अनुभवों का विस्तार हैं।

कार्यक्रम का आरंभ दिव्या जोशी के स्वागत-वक्तव्य से हुआ। मनु पाण्डेय ने पुस्तक से एक अंश का बहुत ही सुंदर पाठ प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साहित्य एवं कला अध्येता विशाल पाण्डेय एवं धन्यवाद-ज्ञापन प्रियंका तिवारी द्वारा किया गया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य विद्वान, कवि, लेखक, शिक्षाविद एवं साहित्य अध्येता उपस्थित थे।

प्रस्तुति : डॉ. बरुण कुमार एवं श्रीमती सुनीता पाहूजा

हुआ। अपने उद्बोधन में माननीय राज्यपाल महोदय ने भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक उपनिषदों के मूल तत्त्वों को सरल कथाओं के रूप में प्रस्तुत करती है, जिससे पाठकों को आध्यात्मिक चिंतन तक सहज पहुँच मिलती है। राज्यपाल ने उपनिषदों को वेदांत का सार बताते हुए कहा कि ये ग्रंथ आत्मा और परमात्मा के रहस्यों को उजागर करते हैं। उन्होंने नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से जुड़ने और ऐसे साहित्य को अपनाने की प्रेरणा दी। लेखिका डॉ. सुधारानी पांडेय को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि यह कृति संस्कृत ज्ञान से अपरिचित पाठकों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी। उन्होंने भारतीय शिक्षा, संस्कृति और उपनिषदों की वैश्विक प्रासंगिकता पर विचार व्यक्त किए।

साभार : राजभवन, उत्तराखंड की आधिकारिक वेबसाइट

सम्मान

तेलंगाना हिंदी पत्रकार संघ द्वारा सम्मान समारोह

14 सितंबर, 2024 को पत्रकारिता में हिंदी के योगदान को सम्मानित करने के उद्देश्य से तेलंगाना हिंदी पत्रकार संघ द्वारा हैदराबाद में हिंदी दिवस समारोह आयोजित हुआ, जो दिवंगत हुए प्रतिष्ठित पत्रकार और 'हिंदी मिलाप' के संपादक विनय वीर की स्मृति को समर्पित रहा। संघ ने यह निर्णय लिया कि हर वर्ष एक वरिष्ठ हिंदी पत्रकार को 'विनय वीर स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा। इस सम्मान द्वारा न केवल समर्पित पत्रकारों की सेवाओं को मान्यता दी जाएगी, बल्कि युवाओं को भी प्रेरणा प्राप्त होगी। तेलंगाना राज्य के सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री श्री पोंगुलेटी श्रीनिवास रेड्डी तथा पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री एस. वेणुगोपालचारी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित यह समारोह निश्चित ही हिंदी पत्रकारिता को नई ऊँचाइयाँ देने में सहायक सिद्ध होगा।

साभार : तेलंगाना हिंदी पत्रकार संघ, हैदराबाद की वेबसाइट

प्रधान संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
संपादक : डॉ. शुभंकर मिश्र
वरिष्ठ सहायक संपादक : श्री प्रकाश वीर
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
पता : विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius
फ़ोन : (230) 660 0800
ई-मेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट : www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक : www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/
ट्विटर : @WHSMauritius
इंस्टाग्राम : WHS_08

संपादकीय

हिंदी-शिक्षण को सफल बनाने के प्रयास

हिंदी के वैश्विक विस्तार में हिंदी-शिक्षण की भूमिका केन्द्रीय है। वर्तमान समय में दुनिया के विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में हिंदी-शिक्षण की उचित व्यवस्था है और विभिन्न उम्र के छात्र-छात्राएँ हिंदी को मातृभाषा या पैतृक भाषा अथवा द्वितीय भाषा वा विदेशी भाषा के रूप में सीखने के अवसरों का लाभ उठा रहे हैं। हिंदी-शिक्षण की सुलभता के साथ उसकी सफलता सुनिश्चित करना आवश्यक है। स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय; सभी स्तरों पर हिंदी पढ़ाना अनेक चुनौतियों से जुड़ा हुआ है। कई देशों में शिक्षा मंत्रालय, हिंदी प्रचारक संस्थाएँ, विद्यालयों के प्रमुख या प्रबंधक और हिंदी शिक्षक सब मिल-जुलकर चुनौतियों को दूर करते हुए हिंदी-शिक्षण को सफल बनाने का सतत प्रयास कर रहे हैं।

शिक्षण की महत्त्वपूर्ण योजनाओं के तहत शिक्षकों के लिए समुचित प्रशिक्षण का प्रबंध किया जाता है। न्यू यॉर्क के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में हिंदी-उर्दू कार्यक्रम के वरिष्ठ व्याख्याता एवं समन्वयक डॉ. राकेश रंजन का कथन है -

"जो नए शिक्षक होते हैं, उनको सिखाने से पहले कुछ सीखने की ज़रूरत होती है।"

मॉरीशस में प्राथमिक पाठशालाओं में हिंदी पढ़ाने के लिए शिक्षा मंत्रालय द्वारा नवनियुक्त शिक्षकों को द्विवर्षीय प्रशिक्षण-कोर्स अनिवार्य रूप से पूर्ण करना होता है। इस कोर्स के दौरान कुशल प्रबंधन द्वारा कक्षा के वातावरण को सँवारने, बेहतर पाठ-योजना बनाने, योजनाओं का सही कार्यान्वयन करने, उत्तम शिक्षण-प्रणालियों को अपनाने, शिक्षण में सूचना और प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने, परिणामोन्मुख शिक्षण करने आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षणार्थियों का परीक्षण भी किया जाता है। प्रशिक्षण-कोर्स को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरांत ही प्राथमिक स्तर पर शिक्षक हिंदी पढ़ाना आरंभ करते हैं। इस प्रकार वे प्रभावी ढंग और आत्मविश्वास से हिंदी पढ़ा पाते हैं।

हिंदी प्रचारिणी संस्थाओं द्वारा समय-समय पर हिंदी की कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं। विश्व हिंदी सचिवालय द्वितीय भाषा अथवा विदेशी भाषा के रूप में हिंदी का शिक्षण, हिंदी-शिक्षण में मल्टीमीडिया का प्रयोग, हिंदी उच्चारण का शिक्षण, हिंदी व्याकरण का शिक्षण, हिंदी में वाचन एवं लेखन कौशलों का विकास आदि अनेक विषयों पर कार्यशालाओं का व्यवस्थित रूप से आयोजन करता है। इनमें सेवारत नए और अनुभवी दोनों वर्ग के शिक्षक भाग लेते हैं। वे स्कूल के नियमित कार्यक्रमों से बाहर निकलकर अलग-अलग विद्यालयों से कार्यशाला में सहभाग कर रहे शिक्षकों के साथ मिलकर हिंदी-शिक्षण की बाधाओं एवं समस्याओं पर गहराई से विचार करते हैं और उनका व्यावहारिक समाधान ढूँढते हैं। विषय-विशेषज्ञों के मार्ग-दर्शन में वे अपने पूर्व के अनुभवों पर वैज्ञानिक और आलोचनात्मक चिंतन करते हुए वर्तमान शिक्षण को अधिक गुणात्मक बनाने की कोशिश करते हैं और हिंदी के भविष्य के नए सपने बुनते हैं।

हिंदी सीखने वाले विद्यार्थियों की मातृभाषा या घर की भाषा हिंदी से अक्सर अलग होती है। समर्पित हिंदी शिक्षक छात्रों की भाषा को सीखकर उसका प्रयोग पुल के रूप में करते हुए बुद्धिमत्तापूर्वक हिंदी पढ़ाते हैं। हिंदी में छात्रों की रुचि न घटे, इसके लिए शिक्षक अपनी कक्षा को आकर्षक और मनोरंजक बनाने के कारगर उपाय ढूँढते हैं। इस संदर्भ में इंग्लैंड के 'सोआस विश्वविद्यालय' में भाषा, संस्कृति एवं भाषा-विज्ञान संकाय के हिंदी व्याख्याता श्री नरेश शर्मा का कथन हैं -

"हम अपनी कक्षा के लिए कुछ-न-कुछ सोचते रहते हैं और कुछ तैयारी करते रहते हैं।"

हिंदी के वर्ण, शब्द और वाक्य सिखाकर संतुष्ट हो जाने की बजाय प्रतिबद्ध शिक्षक अपने छात्रों को हिंदी के स्वतंत्र पाठक और लेखक बनाने का प्रयास करते हैं। शिक्षकों की मेहनत को देखकर छात्र प्रेरित होते हैं और वे हिंदी को नई भाषा के रूप में सीखने के लिए अधिक सक्रिय हो जाते हैं। समझदार शिक्षक यह जानते हैं कि प्रत्येक विद्यार्थी के सीखने की क्षमता अलग होती है। अपने छात्रों की भिन्न योग्यताओं और रुचियों को ध्यान में रखकर वे अपने शिक्षण में आवश्यक बदलाव करते हैं और जटिल भाषाई अवधारणाओं को सरल ढंग से प्रस्तुत करते हैं। मॉरीशस के 'हिन्दू गर्ल्स कॉलिज' की हिंदी विभागाध्यक्षा श्रीमती साधना जगरनोथ कहती हैं -

"हम हिंदी पाठ्यक्रम को सहजतापूर्वक छात्रों तक संप्रेषित करते हैं। इस प्रकार हमारे विद्यार्थी 'कैंब्रिज विश्वविद्यालय' की परीक्षा में भाग लेकर अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होते हैं।"

बाल-मनोविज्ञान के अनुसार सरल शिक्षण से छात्र खुश होकर भाषा सीखते हैं। हिंदी की कक्षा में उनकी भागीदारी बढ़ती है और हिंदी सीखने की उनकी योग्यता का विकास होता है। अंततः वे हिंदी के कौशलों का बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

अच्छी योजनाओं को लेकर चलने वाले हिंदी शिक्षकों को स्कूल-प्रबंधन द्वारा प्रोत्साहन और सही दिशा-निर्देश प्राप्त होता है। हिंदी-शिक्षण में आवश्यक सुधार लाने, हिंदी पढ़ने वाले छात्रों की संख्या बढ़ाने, हिंदी की पाठ्य-सामग्रियाँ और अन्य उपयोगी संसाधन उपलब्ध कराने, हिंदी-शिक्षण के लिए अनुकूल और स्वस्थ वातावरण निर्मित करने, हिंदी की परीक्षा के परिणामों की निगरानी करने, हिंदी-शिक्षण की नई योजना बनाने, हिंदी की गतिविधियों का वित्तपोषण करने आदि बहुआयामी शिक्षण प्रक्रियाओं में विद्यालयों के अधिकारी अमूल्य सहयोग प्रदान करते हैं। बहरीन के 'न्यू मिलेन्यम स्कूल' की हिंदी विभागाध्यक्षा श्रीमती ममता तिवारी कहती हैं -

"मेरा मानना है कि किसी भी स्कूल में भाषा को कैसी दिशा दी जाती है, वह काफ़ी हद तक नेतृत्व पर निर्भर करता है। हम भाग्यशाली हैं, हमारे प्रिन्सिपल सर व्यक्तिगत रूप से दिन-प्रतिदिन हिंदी के प्रचार-प्रसार में रुचि लेते हैं।"

स्कूल की ओर से हिंदी का उत्कृष्ट शिक्षण करने वाले शिक्षकों को पुरस्कृत भी किया जाता है। शिक्षकों की मेहनत को विद्यालय द्वारा जब उचित पहचान दी जाती है, तब उनमें उद्देश्य की भावना बहुत गहरी हो जाती है।

हिंदी-शिक्षण की चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने के प्रयास अनेक स्तरों पर जारी हैं। शिक्षा मंत्रालय और हिंदी प्रचारक संस्थान पूर्वसेवाकालीन और सेवाकालीन प्रशिक्षण या कार्यशाला का आयोजन करके, जहाँ हिंदी शिक्षकों को आधुनिक और संतुलित हिंदी-शिक्षण पद्धति का प्रयोग करने के लिए सुविज्ञ बनाते हैं, वहाँ हिंदी शिक्षक अपनी कुशलता, प्रतिबद्धता और गहरी समझ से हिंदी-शिक्षण को सफल बनाने का भरसक प्रयास करते हैं। योजनाबद्ध तरीके से काम करने वाले परिश्रमी हिंदी शिक्षकों को स्कूल का प्रशासन उचित समर्थन प्रदान करता है। इन समन्वित प्रयासों से ही हिंदी-शिक्षण प्रगतिशील होता है और वैश्विक स्तर पर हिंदी की समृद्धि होती है।

डॉ. माधुरी रामधारी
महासचिव